

॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ बहवः पुरुषा ब्रह्मन्विन्ति पुरुषाणां लघापि पुरुषांतरं प्रणमनीत्याश्चर्यं संधातादन्यः पुरुषो नास्तीति भावः ॥ २३ ॥ २४ ॥ बहवः पुरुषाः पुनरेति ये संधातात्मानस्त्वया उदाहृताः एतदतिक्रान्तप्रत्यक्षेणैवापहतविषयवेदाप्रतिपाद्यैर्नैतद्ब्रह्मव्यमित्यर्थः अनधिगतार्थज्ञापकं हि प्रमाणं आत्मभेदश्चाधिगतएवेति न शास्त्रस्य विषयः तत्परत्वे मिहिमस्य भेषजमिव तूशास्त्रस्यानुवादकत्वापत्तेः अतस्तत्त्वमस्या दिवाक्यं नैगौणभेदपरमित्यर्थः ॥ २५ ॥ आधारोऽधिष्ठानं एकस्य विराजः सोपाधिकत्वेऽपि पुरुषस्यैकत्वमस्ति किमुति निरुपाधिकत्वेऽतिभावः ॥ २६ ॥ वि

पितामह उवाच स्वागतं ते महाबाहो दिष्ट्या प्राप्तोऽसि मेति कं ॥ कच्चित्ते कुशलं पुत्रस्वाध्यायतपसोऽसदा ॥ १५ ॥ नित्यमुग्रतपास्त्वं हिततः पृच्छामि ते पुनः ॥ १६ ॥ रुद्र उवाच त्वत्प्रसादेन भगवन्स्वाध्यायतपसोर्मम ॥ कुशलं चाव्ययं चैव सर्वस्य जगतस्त्वथ ॥ १७ ॥ चिरदृष्टो हि भगवान्वैराजसदने मया ॥ ततो हं पर्वतं प्राप्तस्त्विमं त्वया दसेवितं ॥ १८ ॥ कौतूहलं चापि हि मे एकांतगमने नते ॥ नैतत्कारणमलं हि भविष्यति पितामह ॥ १९ ॥ किं नु तत्सदनं श्रेष्ठं क्षुत्पिपासा विवर्जितं ॥ सुरासुरैरध्युषितं क्रविभिश्चाश्रामितप्रभैः ॥ २० ॥ गंधर्वैरप्सरोग्भिश्च सततं संनिषेवितं ॥ उत्सृज्ये मंगिरिव रमेकाकी प्राप्सवानसि ॥ २१ ॥ ब्रह्मोवाच वैजयंतो गिरिवरः सततं सेव्यते मया ॥ अत्रैकाग्र्येण मनसा पुरुषश्चित्यते विराट् ॥ २२ ॥ रुद्र उवाच बहवः पुरुषा ब्रह्मं स्त्वया स्तृष्टाः स्वयं भुवा ॥ सृज्यंते चापरे ब्रह्मन्सचैकः पुरुषो विराट् ॥ २३ ॥ कोऽसौ चित्यते ब्रह्मं स्वयैकः पुरुषोत्तमः ॥ एतन्मे संशयं ब्रूहि महकौतूहलं हि मे ॥ २४ ॥ ब्रह्मोवाच बहवः पुरुषा पुत्रत्वया समुदाहृताः ॥ एवमेतदतिक्रान्तं द्रष्टव्यं नैव मित्यपि ॥ २५ ॥ आधारं तु प्रवक्ष्यामि एकस्य पुरुषस्य ते ॥ बहूनां पुरुषाणां सयथैका यो निरुच्यते ॥ २६ ॥ तथा तं पुरुषं विश्वं परमं सुमहत्तमं ॥ निर्गुणं निर्गुणा भूत्वा प्रविशंति सनातनं ॥ २७ ॥ इति श्री महाभारतेशां मोक्षोपपन्नारायणीये ब्रह्मरुद्रसंवादे पंचाशदधिकत्रिंशत्तमोऽध्यायः ॥ ३५० ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

श्वं विराजं परमं सूत्रात्मानं सुमहत्तमं कारणं निर्गुणं शुद्धं अनेनानिरुद्धप्रधुम्नसं कर्षणवासुदेवाः क्रमेणोक्ताः तत्र निर्गुणस्यैव निर्गुणवासुदेवप्रवेश इत्यर्थः ॥ २७ ॥ इति शांतिपर्वणि मोक्षोपपन्नारायणीये ब्रह्मरुद्रसंवादे पंचाशदधिकत्रिंशत्तमोऽध्यायः ॥ ३५० ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥